

## शिव- भक्तों के प्रति स्नेह-सम्पन्न पत्र

ओम् नमः शिवाय

परमपिता शिव की प्रिय सन्तान,  
प्रिय आत्मन्!

आपकी परमपिता शिव से अनन्य प्रीत है और आप उनसे आत्म-मिलन अथवा मनोमिलन के आकांक्षी हैं। आपकी उनके प्रति भक्ति एवं श्रद्धा तो है परन्तु क्या आप अपने परम श्रद्धेय अथवा परम पूज्य परमपिता के प्रति निम्नलिखित आवश्यक बातें जानते हैं? -

- 1) शिव और शंकर में क्या अन्तर है? शिवलिंग अथवा ज्योतिर्लिंग किस अव्यक्त स्वरूप की प्रतिमा है? शिव को 'त्रिमूर्ति', 'त्रयम्बकेश्वर', 'देवदेव' किस अर्थ में कहा जाता है?
- 2) शिव का धाम अथवा लोक कहाँ और कैसा है?
- 3) शिव की प्रतिमा पर तीन रेखाएँ और एक बिन्दु किस बात के संकेतक अथवा चिन्ह हैं?
- 4) मनुष्य चोले में आत्मा का क्या स्वरूप है और परमात्मा शिव से उसका क्या अनादि-अविनाशी सम्बन्ध है?
- 5) आत्मा शिव-मिलन कैसे मना सकती है? ईश्वरानुभूति करने की सहज सुलभ विधि क्या है?
- 6) शिव को आत्मा का माता-पिता, सद्गुरु, परमशिक्षक, सखा, सहायक किस अर्थ और संदर्भ में कहा गया है? जबकि शिव परमपिता हैं, तब उनसे हमें क्या विरासत अथवा जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त हो सकता है? शिव को 'माता' और 'पिता' दोनों सम्बन्धों से क्यों याद किया जाता है?
- 7) "शिव के भण्डारे भरपूर, काल-कण्टक दूर" अथवा "शिव भोले भण्डारी एवं अवढर दानी" - ऐसा कहा गया है। तब प्रश्न उठता है कि काल-कण्टक कैसे दूर हों और हमारे भण्डारे कैसे भरपूर हों?
- 8) शिव-पिण्डी पर कलश से जो बूँद-बूँद जल चढ़ाया जाता है, उसका क्या भावार्थ है?
- 9) शिव के आगे जो नन्दीगण बैल दिखाया जाता है, वह किसका प्रतीक है?
- 10) शिव पर बेल-पत्र या अक क्यों चढ़ाया जाता है?
- 11) शिवरात्रि 'रात्रि' ही को क्यों मनाई जाती है? जागरण क्यों किया जाता है? व्रत क्यों रखा जाता है? शिवरात्रि मनाने का ठीक तरीका क्या है?
- 12) शिव परमधाम, निर्वाणधाम, शिव लोक अथवा परलोक से कब अवतरित होते हैं और आत्माओं को किस विधि से मुक्ति और जीवनमुक्ति प्रदान करते हैं?
- 13) क्या आप मुक्ति, जीवनमुक्ति के इच्छुक हैं? उस इच्छा को पूर्ण करने के लिये क्या उपाय है?
- 14) क्या आप जानना चाहते हैं कि इस समय शिव कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं?
- 15) क्या आप जानते हैं कि वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण, आणविक अस्त्रों-शस्त्रों के संग्रह, जन-संख्या में अति वृद्धि, नैतिक मूल्यों में हास और चारित्रिक गिरावट किस स्थिति अथवा संकट का सूचक है और इनका भावी परिणाम क्या होगा और आपको किस महान् स्थिति की अविलम्ब प्राप्ति के लिये क्या करना चाहिये?

उपरोक्त सभी बातों को समझने तथा अनुभव करने के लिए आपको हमारा स्नेह-सम्पन्न निमन्त्रण है, इसके लिये कोई चन्दा या शुल्क नहीं है।

आपकी रूहानी बहनें तथा रूहानी भाई  
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

## शिवरात्रि सन्देश

वर्तमान समय हर एक का जीवन अत्याधिक चुनौतीपूर्ण और तनावयुक्त बन गया है। आजकल पहले से कई गुना अधिक लोग अपने भविष्य के बारे में असुरक्षित और उत्तेजित हो गये हैं। जैसे-जैसे मनुष्य पहाड़ जैसी परिस्थितियों का समाधान ढूँढने का संघर्ष कर रहा है, वैसे वैसे दिनप्रतिदिन उत्पन्न हो रही परिस्थितियों और संकटों से निपटने की शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता और बुद्धिमता महसूस हो रही है। शास्त्रों में कहा गया है कि परमात्मा का अवतरण ऐसे समय पर होता है जब विश्व में अत्याधिक नैतिकता का पतन होता है। भगवद् गीता में एक बहुत प्रसिद्ध श्लोक है,

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

दिनप्रतिदिन विश्व की बिगड़ती हुई परिस्थितियों को देखते हुए हम सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तन के लिए परमात्मा के द्वारा दिये जाने वाले ज्ञान की आवश्यकता और समय के पहचान की सराहना करें।

महाशिवरात्रि अथवा शिवजयन्ती सभी त्योहारों में विशेष त्योहार है क्योंकि यह त्योहार स्वयं सर्वशक्तिमान श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ परमात्मा शिव के इस मनुष्य सृष्टि पर अवतरित होकर मनुष्य आत्माओं को उनके पाप कर्म और दुःखों से मुक्त कर फिर से इस धरती पर स्वर्ग अथवा सतयुग स्थापन करने का यादगार है। शिवरात्रि का गहन आध्यात्मिक रहस्य है कि इस धरती पर काली अंधियारी रात के समय पर जब सम्पूर्ण विश्व के हालात बहुत नाजुक और दयनीय हो जाते हैं तब परमात्मा का अवतरण होता है। निराकार परमात्मा शिव अनादि और अविनाशी है। शिवलिंग की प्रतिमा से परमात्मा के निराकार स्वरूप का बोध होता है। यह परमात्मा के ज्योति स्वरूप का प्रतीक है, जोकि परमात्मा के बारे में अन्य अनेक धर्मों की मान्यता के साथ बिल्कुल मिलता-जुलता है इसीलिए भारत के 12 प्रसिद्ध शिव के मंदिरों को ज्योर्तिलिंगम् मठ कहा जाता है। यह परमात्मा के प्रकाश स्वरूप होने का सूचक है। हरेक प्रार्थना स्थलों पर ऊँचाई पर टंगे हुए अखण्ड जलती हुई ज्योति, चर्च में लैम्प का जलाना, इजिप्ट की संस्कृति में परमात्मा के लिए लाइट का चित्र दिखाना, बैबेलोनियन संस्कृति, ध्रुण (इण्लैण्ड के पुरातन जाति के पुरोहित), नारवेजियन समाज आदि-आदि में उसे दिव्य प्रकाश के रूप में दिखलाना एक परमात्मा के निराकार और सर्वश्रेष्ठ होने की मान्यता का समर्थन करता है।

शिव शब्द का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी अथवा सर्व का सदा भला करने वाला। परमपिता परमात्मा शिव अपने तीन दिव्य कर्तव्य स्थापना, पालना और पुरानी पतित विकारी दुनिया का नाश कर नई दुनिया की स्थापना द्वारा मनुष्य सृष्टि पर रहने वाली आत्माओं का कल्याण करते हैं अर्थात् सभी मनुष्य आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति देते हैं।

शिवरात्रि पर लोग उपवास करते हैं और उस उपवास का अर्थ है, विकारी वृत्तियों से, विकारों से ऊपर उठकर हम ऊपर में वास करने वाले परमात्मा के साथ का अनुभव करें। जागरण का सही अर्थ है जगना या जागृत होना अर्थात् आध्यात्मिक अज्ञान की नींद से जागना और अपने आपको बुराईयों के प्रभाव और विकारों के प्रभाव से बचाना अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि से स्वयं को मुक्त करना।

एक बहुत बड़ी खुशखबरी यह है कि इस धरा पर परमात्मा का अवतरण हो चुका है और वह इस धरती पर शान्ति, पवित्रता और सम्पन्नता की दिव्य संस्कृति की स्थापना कर रहे हैं। राजयोग की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के माध्यम से परमपिता परमात्मा शिव इस समय इस धरती पर क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहे हैं। इस तरह से शिवरात्रि नये समय चक्र के प्रारम्भ का यादगार स्वरूप है, जब सारी दुनिया कलियुग अथवा आयरन एज से गोल्डन एज सतयुग की ओर बढ़ रही है। अब नकारात्मकता रास्ता छोड़ सकारात्मकता को स्थान दे रही है। आज जब भ्रष्टाचार, पापाचार और अनिश्चितता ने सम्पूर्ण विश्व पर अधिकार जमा लिया है, जब नैतिक और चारित्रिक मूल्यों का महान पतन हो चुका है, ऐसे समय पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय निराकार परमपिता परमात्मा शिव के 1936 में प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम में अवतरित होने की 82वीं जयन्ती मना रहा है।

तो आईए इस शिवरात्रि पर परमात्मा शिव के वरदान और दुआओं से अपने व्यक्तिगत जीवन की झोली भर लें। सही अर्थ में शिवरात्रि मनाना अर्थात् अपनी नकारात्मकता को नाश कर सकारात्मक और पवित्र वृत्ति को अपने जीवन में धारण कर उस परमात्म प्रज्ञा और दिव्य गुणों से सम्पन्न बनाना।

## *Shivaratri Message*

Life today has become very challenging and stressful. More than ever before people are insecure and anxious about their future. As humans struggle to find solutions to the mounting problems, it is evident that we need a higher wisdom and power to deal with the emerging crises.

It is said in the scriptures that God comes at the time of extreme moral degradation. There is a very famous shloka in Bhagavad Gita: “yada yada hi dharmasya glanirbhawati bharat, abhyuthannam adharmasya tadatmanam srijamyaham”. Looking at the deteriorating condition of the world, we can easily appreciate that “THE TIME” has come when God’s intervention is necessary to bring about a transformation in this world.

Mahashivaratri or Shiva Jayanti is the most significant of all festivals for it marks the descent of the Highest on High God Shiva in the human world to liberate human souls from sin and suffering and re-establish heaven or Satyuga on earth. The deep spiritual meaning of Shivaratri is that God descends on earth at the time of extreme darkness (ratri) when the condition of the world becomes critical.

God is incorporeal and immutable. The Shiva lingam denotes the incorporeal form of God Shiva. It signifies the form of God as a point of light, which is very similar to the description of God across many other faiths. This is why the twelve well-known Shiva temples in India are also known as Jyotirlingam Math signifying his form of Light. The eternal light that hangs above the ark in every synagogue, altar lamps in churches, and light symbols associated with Egyptian, Babylonian, Druid, and Norse gods corroborates to the widespread belief in the divine light as the image of one, incorporeal, Supreme Being.

The literal meaning of the word Shiva is benefactor or one who does well to all. Supreme Soul Shiva brings benefit to all souls by performing the divine functions of creating and sustaining a new pure world and destroying all vices and evil from the old impure world, i.e., He gives liberation and salvation to all human beings.

The true fasting (upvaas) on Shivaratri is that we abstain from vicious thoughts and stay in His Company. The true Jagran or awakening means to awaken from the slumber of spiritual ignorance and to protect the self from the evil influence of vices such as lust, anger, greed, ego and attachment.

The good news is that God has already arrived on this earth to establish one divine culture of peace, purity, love, and prosperity. He is in the process of bringing a revolutionary change in this world through His elevated teachings in the form of Raja Yoga. Shivaratri thus commemorates a momentous occasion, marking the beginning of a new cycle of time, when the world passes from the Iron Age or Kaliyug into the Golden Age or Satyug, when the negative give way to the positive.

Today, when corruption, unrighteousness and immorality have spread all over the world, when ethical and moral values have declined drastically, the Prajapita Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya is celebrating the 82nd Shivaratri commemorating the year when Godly revelations first came through the human medium Prajapita Brahma in 1936.

Let us celebrate this Shivaratri and experience the blessings and benevolence of God Shiva by carrying out in our personal life what Shivaratri commemorates that is, destroying negative ways of thinking and nurturing a pure and positive attitude to illuminate our lives with God’s wisdom and divine virtues.

\*\*\* Om Shanti \*\*\*